पठनीय

पुस्तक का नाम – **समझ का माध्यम**
लेखक – **संध्या सिंह, कीर्ति कपूर**
प्रकाशन वर्ष – **एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली**
मूल्य – **₹ 45.00**

बच्चों के जीवन और उनकी शिक्षा में भाषा की भूमिका उपनिवेश रह चुके समाजों में अनेक प्रकार की विसंगतियों से घिरी रही है। इन विसंगतियों पर विचार करने के प्रयास भी प्राय: सामाजिक मान्यताओं और राजनीतिक विवादों से घिर जाते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि शिक्षा संबंधी भाषा-नीति काफ़ी लंबे समय से चर्चा और शोध दोनों के दायरों से बाहर रही है। इस स्थिति को बदलने के उद्देश्य से **राष्ट्रीय परिषद्** ने '*समझ का माध्यम*' शीर्षक से गोष्ठियों की शृंखला का आयोजन किया था। उदयपुर, पटना, वाराणसी और दिल्ली में आयोजित की गईं इन गोष्ठियों का फ़ोकस विद्यालय के दैनिक जीवन में बच्चों के भाषायी अनुभवों की विवेचना पर था। कोशिश भी की, कि भाषा के प्रयोग में शिक्षा नीति की एक अर्से से अवरुद्ध पड़ी बहसें नये सिरे से दोबारा शुरू हों। यह पुस्तक इस कोशिश को आगे बढ़ाने के इरादे से प्रकाशित की गई है। पुस्तक की विषयवस्तु, गोष्ठियों में उठाए गए प्रश्नों और उनका उत्तर तलाशने के लिए इस्तेमाल किए गए तर्कों की मदद से रची गई है। ऐसा संवाद आज की ऐतिहासिक आवश्यकता है। शिक्षा के अधिकार के कानून ने बच्चे की मातृभाषा के महत्त्व को पुर्नस्थापित करने की ताज़ा कोशिशें की हैं। इस कदम में शिक्षा के औपनिवेशिक इतिहास की विरासत से उत्पन्न मानसिक और सामाजिक जकड़न को दूर करने की शक्ति है। ज़ाहिर है, किसी भी कानून में निहित शक्ति को अभिव्यक्त होने में सामाजिक और संस्थागत सहयोग की ज़रूरत होती है। अँग्रेज़ी माध्यम स्कूलों का प्रचलन समकालीन यथार्थ भर नहीं है, एक जटिल सांस्कृतिक संरचना भी है। इसे संवादपरक चेतना के दायरे में लाकर ही किसी बदलाव की उम्मीद की जा सकती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005 में बदलाव की दिशा और प्रकृति को लेकर पर्याप्त संकेत दिए गए थे। इन संकेतों का विस्तृत खुलासा भारतीय भाषाओं और अँग्रेज़ी की पढ़ाई से संबंधित राष्ट्रीय फ़ोकस समूहों के प्रतिवेदनों में किया गया है। ये दोनों दस्तावेज़ कक्षा में शिक्षण के माध्यम को

*राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, द्वारा विकसित समझ का माध्यम

बच्चे की समझ के स्वाभाविक विकास क्रम के मनोभाषावैज्ञानिक संदर्भ में रखते हैं।

इस संदर्भ का एक महत्वपूर्ण आयाम भारत का बहुभाषिक वातावरण है। हमारे बच्चे जन्म से ही बहुभाषिक माहौल में जीते हैं और इस माहौल में निहित लोकसर्जना को अपने स्वाभाविक बौद्धिक विकासक्रम में ग्रहण करते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम शिक्षा-व्यवस्था में भाषा की पढ़ाई और माध्यम-भाषा के सवाल को लेकर व्याप्त जड़ता को इस वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में रखें और समझें।

समझ का माध्यम में छह अध्याय हैं। पहले अध्याय में शिक्षा संबंधी दस्तावेज़ों में भाषा के अंतर्गत शिक्षा आयोग की रिपोर्ट – स्कूली पाठ्यचर्या-1964-66, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, क्रियान्वयन का कार्यक्रम-1992, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-1988, 2000, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भाषा शिक्षण संबंधी संस्तुतियों को दिया गया है। दूसरा अध्याय है- भाषा और समझ जिसके अंतर्गत, बच्चे की समझ और भाषा, समझ के आधार के रूप में भाषा, भाषा और सामाजिक समता, बच्चे की अस्मिता का सवाल, सार्थक शिक्षा के प्रयास के बारे में दिया गया है। पुस्तक का तीसरा अध्याय बहुभाषिकता पर विचार-विमर्श करता है। इसमें बहुभाषिकता का उद्देश्य, बच्चे की भाषा क्षमता, सार्वभौमिक व्याकरण की परिकल्पना, बहुभाषिकता और अल्पसंख्यक तथा आदिवासी भाषाएँ, बहुभाषिकता और दक्षिण भारतीय भाषाएँ, बहुभाषिकता और अँग्रेज़ी की कक्षा, बहुभाषिकता कक्षा, बहुभाषिकता की चुनौतियों के संबंध में दिया गया है। चौथे अध्याय का विषय है- विषयों के केंद्र में भाषा इसमें इतिहास के झरोखे से, सभी विषयों का अध्यापक, भाषा का अध्यापक है, चिंतन की आज़ादी और मौलिकता का सवाल, भाषा और अन्य विषय, तकनीकी शब्दावली और बच्चे की समझ, उच्च शिक्षा और अन्य विषय के संबंध में दिया गया है। पाँचवें अध्याय भाषाओं में संवाद के अंतर्गत संदर्भ – अँग्रेज़ी और हिंदी, अँग्रेज़ी और हिंदी का संबंध, सन् 1967 के बाद, सन् 1987 का दौर, बदलाव का नया दौर, अँग्रेज़ी के विकास का इतिहास, नये शब्द गढ़ने की ज़रूरत के बारे में दिया गया है। पुस्तक का अंतिम अध्याय है- मुद्दे और चुनौतियाँ। इस अध्याय के अंतर्गत शिक्षक की तैयारी, समाजिक तैयारी, प्रशासनिक तैयारी के संबंध में दिया गया है। परिशिष्ट - 1 में राज्यों में विभिन्न स्तर पर माध्यम भाषाएँ तथा परिशिष्ट - 2 में माध्यम के रूप में प्रयोग की जाने वाली भाषाओं के बारे में आँकड़े दिए गए हैं।

निश्चित रूप से यह पुस्तक भाषा संबंधी नीतियों और कार्यक्रमों को नए सिरे से जाँचने के लिए एक आधार पत्र की भूमिका निभाएगी। हमें आशा है कि इस पुस्तक के ज़रिए बच्चों की शिक्षा से सरोकार रखने वाले नागरिक – जिनमें शिक्षक, उनके प्रशिक्षक, अधिकारी, जन-प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता और माता-पिता शामिल हैं – शिक्षण को भाषा के सवाल पर सोचने और संवाद चलाने के लिए उत्साहित महसूस करेंगे।

❑❑❑